JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# "मौसम बदलने की आहट" पुस्तक परीक्षण

**श्रीमती.शीतल रघुनाथ लिंडायत**

**श्री.डी.डी.बॉयइज हाई स्कूल एंड जूनियर कॉलेज नाशिक .**

'अनामिका' जी हिंदी की प्रसिध्द लेखिका है| जिनका जन्म १७ अगस्त १९६१ को मुजफ्फरपुर (बिहार) में हुआ| हिंदी की सुप्रसिद्धकवयित्री होने पर भी कथा साहित्य में अनामिका जी की गहरी पकड़ है| अनामिका जी ने तीन महत्वपूर्ण पुस्तकें स्त्री-विमर्श पर लिखी हैं, जिनमें **'मन मांझने की जरुरत', 'मौसम बदलने की आहाट', 'स्त्री-विमर्श की उत्तर गाथा**'आदि महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं|

मौसम बदलने की आहट सामायिक प्रकाशन २०२०-२१, जाटवाडा, नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ द्वारा प्रकाशित पुस्तक है| जिसका प्रकाशन वर्ष सन् २०१९ है | लेखिका ने इस पुस्तक को "युवकों की उस पीढ़ी को समर्पित किया है जो स्त्रीवादों आदर्शों से अपना द्वंद्व चला रहे हैं | प्रस्तुत पुस्तक में कुल १७६ पृष्ठ हैं,जिसका सजिल्द पुस्तकमूल्य ४०० रूपये है|

**'मौसम बदले की आहट'** इस पुस्तक में अनामिका जी ने कुलबारह स्त्री विमर्श लेख, प्रस्तुत किये हैं| जिनमें **'मौसम बदलने की आहट', 'बंधन बदलते रिश्ते', 'स्त्री भाषा की एक आधुनिकता: संभावना और चुनौतियाँ', आपका नहीं, आप सबका बंटी: साझा मातृत्व की इत्ती कहानियाँ, 'मुक्त कराती हूँ तुम्हें मेरे भीषण भय', 'कुछ समसामायिक प्रकाशन: स्त्री सापेक्ष छिटपुट टिप्पणियाँ', समन्वित नारीवाद और भारतीय देवियाँ', स्त्रीत्व और भाषा', 'स्त्री कथाकारों की स्त्रियाँ', 'तीसरी दुनिया; एक स्त्री का अंतर्जगत बनाम बहिर्जगत', 'संवेदनशील भारतीय समाज और स्त्री**" कुछ स्थितियाँ, 'उत्तरवाद और साहित्याध्ययन की चुनौतियाँ आदि स्त्री विमर्श संबंधी लेख प्रस्तुत हुएहैं|

'मौसम बदले की आहट' विमर्श कि माध्यम से लेखिका ने सामाजिक परिवर्तन की और संकेत कियाहैजो वर्तमान समय की 'सिग्नेचर ट्यून' से संबंधित है| लैंगिक अस्मिता, यौन शुचिता, जातीय-वर्गीय अस्मिता पर चर्चा करते हुए स्वयं के विचार स्पष्ट करते हुए वेलिखती हैं कि- "अगर कभी आपने किसी अस्पताल के वार्ड के २० प्रतिशत बर्न का केस देखा हो तो आप मेरी बात समझ पायेंगे- पिघली हुई नाइलोन की साड़ी जैसे चमड़ी से सट जाती है- मेरी लैंगिक पहचान, मेरी जातीय या वर्गीय अस्मिता मेरी चमड़ी से ऐसे हीआ सटी हैकि लगता है अब तो मेरी

जान के साथ ही जायगी"[१]वर्तमान युवती में सम्पूर्ण वसुधा समाई हुई है जिसको लेखिका ने माइक्रो वसुधा की, संज्ञा दी है| इनमें उनके पडोसी, सहकर्मी, अखबारवाले, सब्जीवाले, दूधवाले पाठक, श्रोता, छात्र, क्लासमेट, मरीज, गाड़ी चालक, कंप्यूटर ऑपरेटर की दुकानवाले, माली, सेल्सगर्ल, सेल्सबॉयइज, एल.आई.सी. एजेंट, बैंक कर्मचारी, डाकघर और पुस्तकालय के लोग, कुरियारवाला, साधू, फकीर, बसमेट, पुराने सहपाठी, मायके ससुराल के सभी सरलचित लोग, कबाडी, कुछ अनाथालय और स्त्री सदन, थोड़े-से वृधाश्रम, बच्चों के शिक्षक, कोच, कम से कम इतने लोगों से उनके एकदम सच्चे अंतरंग, दूर तक चलने वाले रिश्तेदार बनाते ही है | सबके सुख-दुःख,सबकी हारी-बीमारी में वे शामिल होती हैं| इनका यह सरल बहनापेवाला रिश्ता होता है कोई स्वार्थ नहीं न ही औरत-मर्द वाला रिश्ता|

विवाह के बाद मायके के परिवार से स्त्रियों का रिश्ता और घनिष्ठ होता जाता है| कहने के लिए लड़कियाँ बिदा होती है, पर मन सेबिदा होते हैं लड़के|डोली चढते ही उनका मन डोला पांय पांय हो जाता है, मुड़कर देखना ही नहीं चाहता- **'अग्रशोची' सदा सुखी'** का दर्शन वे ऐसे आत्मसात कहते हैं कि पूछिए मत |

बंधन बदलते रिश्ते, विमर्श में भी लेखिका स्त्रियों के रोजगार क्षेत्र में पदार्पण के बाद पारिवारिक सामाजिक रिश्ते किस प्रकार बदलते हैं इसपर चर्चा करती हैं | सामाजिक स्तर पर देखें तो यह एक कठोर सच है कि प्रेमिका/पत्नी या बहनमातहत और बेचारी सी हो तो अच्छी और रक्षणी लगती है, वरना आँख का काँटा| एक कांस्टेबल महिला का पुलिस में चुनाव होनेके बाद भाइयों का व्यवहार उसके प्रति एकदम ठंडा हो गया है, वे कहते हैं कि अब तो तुम खुद मर्द हो गई है, अब तुझे हमारी क्या जरुरत है |[२] इस प्रकार लेखिका ने बदलते रिश्ते पर प्रकाश डालते हुए पत्नी प्रेम में अंधे भाइयों का अपनी पत्नी के प्रति आगाध प्रेम, तजिए ताहि कोटि बैरी सम जद्यपि परम सनेही|' दोहे के माध्यम से हनुमानभाव वाला प्रेम चित्रित किया | भाषा की अभिव्यंजना शैली का यह उत्तम उदहारण है |

स्त्री भाषा की पराआधुनिकता, संभवता एवं चुनौतियाँ विमर्श के अंतर्गतभूमंडलीकरण के बाद की स्थितियों का चित्रण बखूबी से किया है | स्त्री के बदलते परिवेश, संघर्ष लोकचेतना को उभारा है | इसमें यह व्यक्त किया गया है कि किस प्रकार प्रोफ़ेसर/संपादक/ वरीय कलाकार / अध्यापक / टीमलीडर/ बॉस / सहकर्मी / निर्देशक आदि प्रभावी पुरुषों की भावनाओं के संग खिलवाड़ करती हैं और मतलब निकल गया तो पहचानती नहीं, यौन-उत्पीडन का आधा दोष तो उनका है|

"**आपका नहीं आप सबका बंटी:साझा मातृत्व की इत्ती कहानियाँ**"इस विमर्श के माध्यम से पुरुष अहंकार पर गहरी चोट की है| बहनापे के सूत्र में बंधी स्त्रियाँ, किस प्रकार पुरुष के बिना भी आराम से जीना सीख गयी हैं| **'अपना संसार उन्होंने इतना बड़ा कर लिया है कि स्त्री-पुरुष सबंध उसके जीवन का केंद्रीय सच रहा ही नहीं, वात्सल्य ही उनके जीवन का केंद्रीय सच' रह गया है|**[२]

**'मुक्त करती हूँ तुम्हें मेरे भीषण भय'** विमर्श के माध्यम से लेखिका ने उपन्यास लेखन में महिलाओं की भागीदारी का वर्णन किया है| जिसमें चाक के माध्यम से श्रीधर और सारंग के संबंधों पर चर्चा करते हुए **'कठगुलाब'**

उपन्यास में किस प्रकार **'सार्वभौम भागिनिवाद' (युनिवर्सल सिस्टरहुड)** के माध्यम से पूरब, पश्चिम दोनों में औरतों के दैहिक, मानसिक और बौध्दिक शोषण के जो महीनचक्र लगातार चलते रहे हैं, उनका सामना स्त्रियाँ अपने आत्मिक बल और आपसी संघटन से कैसे कर रही हैं, इसकी स्पष्टझलक दिखती है|

**'कुछ समसामायिक प्रकाशन"** स्त्री सापेक्ष छिटपुट टिप्पणियाँ में लेखिका ने **'सूटकेस-भरभारत बंद और मैजेई'** सबकी आवाज के पर्दे में भौतिकता से पल्ला बचाये रखने का बौध्दिक संयम नयी औरत की दुनिया के पाँच दरवाजे 'दुर्ग-भेद' और 'घर-घर: घर से दुर्ग और दुर्ग से घाट तक का सार्थक सफ़र, सुमति अय्यर की कवितायें सीढियाँ और अंतत: एक दृष्टि, 'अपने-अपने कोणार्क और यहाँ वितस्ता बहती हैं', 'ठहराने और 'बह जाने' की दोके माध्यम से मन:स्थितियाँ आदि के माध्यम से स्त्री के बदलते तेवर नए विमर्श पर प्रकाश डाला है|

'समन्वित नारीवाद और भारतीय देवियाँ' विमर्श के माध्यम से सीता और सावित्री के सुलझे चरित्रों की तुलना करते हुये लक्ष्मी और सरस्वती पर हुए अत्याचारों का वर्णन करते हुये उनकी महत्त्व का वर्णन किया है|

**'स्त्रीत्व एवं भाषा'** विमर्श के अंतर्गत किस प्रकार भारतीय सौंदर्यशास्त्र स्त्री के धैर्य और सहिष्णुताधर्मी का महात्म बखानता है| इनके अनुसार पद्मिनी नायिकाओं को बोलने की क्या जरुरत| 'भट्टिनी को बोलने की क्या जरुरत| बोलती है निउनियाएँ, प्रौढ़ायें, वेश्याएँ, विषकन्याएँ, रणचंडियाँ और दासियाँ जिन बेचारियों का बोले बिना काम नहीं चलता|'[३] आदि का वर्णन किया गयाहै |

**'स्त्री-कथाकारों की स्त्रियाँ'** इस विमर्श के अंतर्गत औरत की आजादी की बाद पर कुपित होते मर्दों की तिलमिलाहट को जायज और स्वाभाविक कहा गया है | पहले दौर की फेमिनिज्म अखंडित नारीवाद की बात करता है, जो निरे प्रतिक्रियावादी के ऊपर की चीज है | **'दुनिया के अलग-अलग कोनों में आज औरत जो लिख रही है, उससे नयी औरत का जो बिम्ब उभरता है, वह कितना 'रूटेड' (संस्कारबध्द) और कितना आजाद है इसपर निगाह डाली जा सकती है|'**[४]

**तीसरी दुनिया: एक स्त्री का अंतर्गत बनाम बहिर्जगत** का विमर्श है| जिसमें उत्तरसंरचनावाद ने 'एकलय, एकसूत्र संप्रभु व्यक्ति की पुरानी धरणा की धज्जियाँ उड़कर रख दी थी|' जिसमें यह बताया गया है कि स्त्री और पुरुष की लड़ाई एक ऐसी लड़ाई है, जिसमें सत्ता का हस्तांतरण उतना अहम् मुद्दा नहीं जितना दृष्टियों और व्यक्तियों का शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और सामंजस्य|

**संक्रमणशील भारतीय समाज और स्त्री: कुछ स्थितियाँ** (साक्षात्कारों के आधार पर पल्लवित स्त्री विमर्श है| जिसने विविध पात्रों के नाम से जैसे पात्र एक : रिमोट कंट्रोल विवाह, पात्र दो: मॉडगान उर्फ़ अतिमा का मन और जिन्नात: एक परकाया प्रवेश, पात्र तीन : तरु के दर्शनार्थी और जे.एन.यू. पात्र चार : 'ब्लेश हर वेनशी एज रिगिश', अष्टयाम और केले का घौद, कूलर प्रसंग, मछली मछली कितना पानी, पात्र आठ: शून्य का पहाडा: चेतना उवाच आदि के माध्यम से स्त्री विमर्श के विविध कोनों को उजागर किया है|

उत्तरवाद और साहित्याध्ययन की चुनौतियाँ उत्तरगंधी कृतियों का विश्लेषण जहाँकिया गया है वे हैं, 'टूटी हुई, बिखरी हुई' (शमशेर) 'उत्तर-कबीर' और 'बाघ' (केदारनाथ सिंह), खिलेगा तो देखेंगे (विनोद कुमार शुक्ल), 'कुरु-कुरु स्वाहा' और 'हम्जड' (मनोहर श्याम जोशी)' पॉल गोमरा का स्कूटर, और 'वॉरेन हेस्टीन्ग्स का सांड (उदय प्रकाश)' 'कठगुलाब' (मृदुला गर्ग) और 'कालीकथा: वाया बाइपास अलका सरावगी) आदि इसके अलावा दलितों, अनादृतों के विशिष्ट अनुभव- मंडल और औरत की दैहिक संवेदनायें तथा विशिष्ट अनुभूतियों की और संकेत किया गया है|

अस्तु कह सकते हैं कि,प्रस्तुत पुस्तक 'मौसम बदलने की आहट' पारंपरिक स्त्री विमर्श से हटकर एक ऐसीकोशिश है, जहाँ लेखिका इतिहास और वर्तमान में एक समीचीन चिंतन करती नजर आती हैं | वह आपनी बात एक अलग ही अंदाज में करते हुए उस राजनीतिक षड़यंत्र को भी पहचान लेती है जो स्त्रीवाद को निरे प्रतिक्रियावाद से जोड़कर देखता है | उनके लिए स्त्री आन्दोलन ममता का विस्तार है |

स्त्री साहित्य को वह खुरदरी सतहों के भीतः छिपे जल तत्व का संसाधन मानती हैं जो उपन्यास लेखन में महिलाओं की भागीदारी पर गंभीर चिंतन भी करती हैं | यहाँ समन्वित नारीवाद और भारतीय देवियों को भी विचार का विषय बनाया गया है और स्त्रीत्व एवं भाषा को भी |

अनामिका, मिथकों, सामाजिक परम्पराओं के साथ ही स्त्री-कथाकारों को स्त्रियों पर चर्चा करते हुए नाइजीरिया की जनाब अल्कली से आधुनिक हिंदी रचाकारों तक वृहद विमर्श करती है | अच्छी बात यह है कि अनामिका के आलोचक प्राय: उन अनछुये पहलुओं पर पूरे मन से बात करता है, जिन्हें चर्चा योग्य ही नहीं समझा जाता था | यही कारण है कि आत्मशक्ति विकसित करने में स्त्रियों के आपसी संबंधों की भूमिका के महत्त्व को पहचाना गया है | जीवन-प्रसंगों से जुडा यह विवेचन ही मौसम बदलने की आहट है जिसे हर कोई गुनना-सुनना चाहेगा | जोकि मौसम बदलने की आहट में सम्पूर्णता के साथ विद्यमान है|अनामिका जी की यह सफल और उन्नत कृति है|

**संदर्भ-सूची:**


१. मौसम बदलने की आहट : अनामिका : सामायिक प्रकाशनदिल्ली, प्रकाशन वर्ष २०१९,पृ १०

२. मौसम बदलने की आहट : अनामिका : सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष २०१९,पृ ३०

३. मौसम बदलने की आहट : अनामिका : सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष २०१९,पृ ९०

४. मौसम बदलने की आहट : अनामिका : सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष २०१९,पृ ९६

५. मन मांझने की जरूरत: अनामिका : सामायिक प्रकाशन, दिल्ली, प्रकाशन वर्ष २०१९